बाइबल संतुष्टि के बारे में क्या कहती है?

आइए पॉल की शिक्षा से शुरू करें:

1 तीमुथियुस 6:7-8 (अनुवाद कबीर)

क्योंकि हम कुछ भी इस दुनिया में नहीं लाए थे, और कुछ भी ले जा नहीं सकते।
परन्तु यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र हैं, तो हम उसी में संतुष्ट रहेंगे।

यह पद हमें याद दिलाता है कि मानव जीवन अस्थायी है और भौतिक वस्तुएं स्थायी नहीं हैं। पॉल यहाँ आइयूब की बुद्धि की पुनरावृत्ति कर रहे हैं (आइयूब 1:21), जिन्होंने कहा:

“नग्न ही मैं मां के गर्भ से निकला हूँ, नग्न ही वापस जाऊँगा।”
इसलिए संतुष्टि केवल व्यावहारिक ज्ञान नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण है जो स्वर्ग की अनंत दृष्टि से मेल खाता है।

लेकिन कई लोग इसे नजरअंदाज कर भौतिकवाद के जाल में फंस जाते हैं। एक अन्य पद इस बारे में कहता है:

सभोपदेशक 5:10 (अनुवाद कबीर)

जो धन को प्रेम करता है, वह कभी संतुष्ट नहीं होता; जो संपत्ति को प्रेम करता है, वह अपनी आय से कभी संतुष्ट नहीं होता। यह भी व्यर्थ है।

यह पद लालच की व्यर्थता को दर्शाता है। सबसे बुद्धिमान राजा सोलोमन ने धन की दौड़ की निःसार्थता पर विचार किया। यह हमें चेतावनी देता है कि आत्मा भौतिक चीज़ों से संतुष्ट नहीं हो सकती क्योंकि हमें केवल परमेश्वर में ही संतुष्टि मिलती है (भजन संहिता 16:11)।

धन आंतरिक शांति को भंग कर सकता है

सभोपदेशक 5:12 (अनुवाद कबीर)

मजदूर की नींद मीठी होती है, चाहे वह थोड़ा खाए या ज्यादा,

लेकिन धनवान की बहुतायत उसे नींद नहीं आने देती।

सोलोमन संतुष्ट मेहनती व्यक्ति की शांति की तुलना धनवान की बेचैनी से करते हैं। जब धन हमारे विचारों पर हावी हो जाता है और हमें आराम नहीं देता, तब यह बोझ बन जाता है। यीशु ने चेतावनी दी कि धन आध्यात्मिक वृद्धि को रोक सकता है (मत्ती 13:22) और हमें परमराज्य में निरुपजाऊ बना सकता है।

एक सच्ची कहानी जो इस सत्य को दर्शाती है

मेरा एक मित्र, जो एक उच्च वेतन वाली नौकरी करता है, एक बार मुझसे बहुत उदास होकर मिला। उसने बताया कि उसने काम पर कुछ देखा जो उसे गहराई से प्रभावित किया। महीने के अंत में, सफाई कर्मी—जो बहुत कम वेतन पाते हैं—खुशी से जश्न मना रहे थे। उन्होंने सोडा खरीदा, केक काटा और साथ में हँस रहे थे।

वह हैरान था:
“वे इतने कम में कैसे खुश हो सकते हैं, जबकि मैं अपनी ऊंची तनख्वाह के बावजूद शांति महसूस नहीं करता?”
उस पल ने उसे विनम्र बनाया और सभोपदेशक 5:12 की सच्चाई को जीवन में दिखाया।

परमेश्वर चाहता है कि हम संतुष्ट रहें—लेकिन आलसी नहीं

स्पष्ट हो जाए: संतुष्टि आलस्य या तुष्टता नहीं है। बाइबल गरीबी की प्रशंसा नहीं करती। परमेश्वर चाहता है कि हम समृद्ध हों—
3 यूहन्ना 1:2 (अनुवाद कबीर)

प्रिय, मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम सब बातों में सफल
हो और स्वस्थ रहो, जैसे तुम्हारी आत्मा सफल होती है।

लेकिन समृद्धि के साथ ईश्वरीय संतुष्टि भी होनी चाहिए।

समृद्धि में संतुष्टि का मतलब है कि चाहे हमारे पास बहुत कुछ हो या कम, हमारा हृदय परमेश्वर पर केंद्रित रहे। हम आइयूब की बात दोहरा सकते हैं:

आइयूब 31:25 (अनुवाद कबीर)

यदि मैंने अपनी बड़ी दौलत पर आनन्दित हुआ,

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

जो मेरे हाथों ने पाया था…

आइयूब ने अपनी खुशी धन में नहीं रखी। वह जानते थे कि उनकी पहचान और शांति परमेश्वर से आती है, न कि भौतिक वस्तुओं से। यही सच्ची आध्यात्मिक परिपक्वता है।

संतुष्ट हृदय के लाभ

1. आप परमेश्वर के करीब आते हैं
संतुष्टि आपके हृदय को परमेश्वर को खोजने के लिए मुक्त करती है। जब आप हमेशा
और अधिक की खोज में रहते हैं, तो आपका जीवन व्यस्त हो जाता है। यीशु ने कहा है:

मत्ती 6:33

इसलिए पहले परमेश्वर का राज्य और उसकी धर्मशीलता खोजो, और
ये सारी बातें तुम्हें दी जाएंगी।

एक संतुष्ट व्यक्ति परमेश्वर को पहले स्थान देता है, यह जानते हुए कि वह बाकी सबका प्रबंध करेगा।

2. आप सच्ची खुशियाँ अनुभव करते हैं
जब आप दूसरों से अपनी तुलना करना बंद कर देते हैं और परमेश्वर की व्यवस्था में

विश्राम करते हैं, तो आपको स्थायी आनंद मिलता है। पॉल ने जेल में रहते हुए कहा:

फिलिप्पियों 4:11

मैंने सीखा है कि चाहे किसी भी परिस्थिति में रहूं, संतुष्ट रहूं।

उनकी खुशी मसीह से आती थी, न कि परिस्थितियों से।

3. आप शैतान के जाल से बचते हैं
1 तीमुथियुस 6:9 चेतावनी देता है:

जो धनवान बनना चाहते हैं, वे प्रलोभन और जाल में पड़ते हैं,
और कई मूर्खतापूर्ण तथा हानिकारक इच्छाओं में फँस जाते हैं,
जो मनुष्यों को विनाश की ओर ले जाती हैं।

शैतान लालच का जाल बिछाता है। असंतोष लोगों को धोखा देने, चोरी करने या धन के लिए अपने मूल्यों से समझौता करने को प्रेरित करता है।

4. आप अपने विश्वास की रक्षा करते हैं

1 तीमुथियुस 6:10 कहता है:

क्योंकि धन की लालसा हर प्रकार के बुराई की जड़ है; इससे कुछ
ने विश्वास से भटक कर अपने आप को अनेक दुख दिए हैं।

जब धन आपका प्रभु बन जाता है, तो विश्वास कमजोर हो जाता है। यीशु ने कहा कि कोई परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकता (मत्ती 6:24)।

अंतिम शब्द

बाइबल हमें याद दिलाती है:

1 तीमुथियुस 6:7

क्योंकि हम कुछ भी इस संसार में नहीं लाए थे; इसलिए हम कुछ
भी नहीं ले जा सकते।

और यीशु ने पूछा:

मरकुस 8:36

मनुष्य को क्या लाभ होगा यदि वह सारी दुनिया जीत ले, परन्तु अपनी आत्मा खो दे?

यह एक सवाल है जिस पर हम सभी को सोचने की जरूरत है।

ईश्वर आपको आशीर्वाद दे जब आप भक्ति के साथ संतुष्टि की खोज करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp